बुद्धकालीन बिहार: एक भू – ऐतिहासिक अध्ययन (600 – 500 ईसा पूर्व)

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध का प्रारूप

विश्ववविद्यालय इतिहास विभाग

समाज विज्ञान संकाय

रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोध निर्देशक

डॉ. आयशा अहमद

असिस्टेंट प्रोफेसर

इतिहास विभाग

निर्मला कॉलेज, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

मो. अशरफ

यू. जी. सी. नेट

विश्ववविद्यालय इतिहास विभाग

राँची विश्वविद्यालय

मोबाइल नंबर –9472224410

1. भूमिका

1.1 परिचय

वर्तमान समय में बिहार के नाम से प्रचलित क्षेत्र आज से लगभग 2500 साल पहले भारतीय इतिहास का केंद्र बिंदु रहा है। हालांकि बुद्ध के जन्म के पहले से ही बिहार में जनपदों के विकास के साथ सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक गतिविधियों की औपचारिक शुरुआत हो चुकी थी अथवा यहाँ सभ्यता और संस्कृति के विकास की नींव पड़ चुकी थी। दक्षिण बिहार स्थित मगध का जनपद से महाजनपद और फिर महाजनपद से मौर्य काल में पहले भारतीय साम्राज्य बनने तक के सफर के पीछे की शक्ति एवं प्रेरणा में निश्चित रूप से यहाँ के भौगोलिक पर्यावरण ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की होगी। भूगोल का मुख्य आधार भौतिक वातावरण तथा मानवीय क्रियाओं एवं उनके अंतर्क्रियात्मक संबंधो की छानबीन से सम्बंधित है। भौतिक वातावरण जैसे पर्वत, पठार, मैदान, नदियाँ, वन, मृदा प्रकार इत्यादि में क्षेत्रीय भिन्नता के कारण सामाजिक - सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि आयामों में भी भिन्नता आ जाती है और इन आयामों के विकास के रूप में लगने वाले समय के अध्ययन का ही विश्लेषण हम इतिहास के रूप करते हैं।

बीते दशकों में प्राचीन भारतीय इतिहास पर कई महत्वपूर्ण शोध संबंधी कार्य हुए हैं परन्तु क्षेत्रीय भिन्नताओं से उत्पन्न विशेषताओं को ऐतिहासिक अध्ययनों से मिलाकर अध्ययन की ओर कम ही ध्यान गया है। **हेरोडोटस** के अनुसार **"ऐतिहासिक घटनाओं के अध्ययन का आधार भूगोल होना चाहिए जबकि भौगोलिक अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए"**। बुद्धकाल में महाजनपदों और उनसे सम्बंधित कई बड़े नगरों की उत्पत्ति के पीछे की भौगोलिक दशाओं तथा नगरीकरण के कारकों और साथ ही इनकी उत्तरजीविता से सम्बंधित अंतर्संबंधों को समझने की दिशा में तत्कालीन बिहार (600 - 500 ई.पू.) के भौगोलिक संकेतकों को समझना अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं जिससे यहाँ की ऐतिहासिक घटनाओं के बीच के सहसम्बन्ध स्थापित हो पायें। भारतीय इतिहास में बुद्धकाल का समय द्वितीय शहरीकरण/नगरीकरण से भी सम्बंधित माना जाता है।

छठी एवं पांचवीं शताब्दी ई. पू. बिहार में ब्राह्मणधर्म से अलग कुछ नए श्रमण सम्प्रदायों के विकास हुए जिसमे सर्वप्रमुख बौद्ध धर्म था। बिहार से निकल कर यह धर्म न सिर्फ भारत के अन्य हिस्सों में बल्कि पूर्वी तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में भी फ़ैल गया। बिहार में बौद्ध धर्म के विकास के पीछे के भौगोलिक कारणों तथा भ्रमण एवं वर्षावास के दौरान बुद्ध के पदचिन्हों से सम्बंधित स्थलों की वर्तमान में पहचान तथा उनका आधुनिक मानचित्रण प्रणाली द्वारा विश्लेषण इत्यादि की दिशा में कम ही कार्य हुए हैं। बिहार में गंगा अपवाह क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों की अवस्थिति और उनके बीच यातायात के मार्गों के विकास से उत्पन्न परिस्थितियों ने किस प्रकार तत्कालीन मानवीय अंतर्संबंधों को प्रभावित किया होगा, इस सन्दर्भ में भी बुद्धकालीन बिहार के भौगोलिक पर्यावरण की भूमिका का अध्ययन वांछनीय है।

1.2 शोध रिक्ति एवं साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत शोध से सम्बंधित विभिन्न साहित्यों के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट होता है की इन सब में बुद्धकाल से सम्बंधित भौगोलिक इतिहास के अध्ययन में आधुनिक भौगोलिक सूचना तंत्र प्रणाली (Geographical Information System) और मानचित्रण प्रणाली के समावेशन का नितान्त अभाव है जो तत्कालीन ऐतिहासिक सहसंबंधों (correlation) को स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण उपकरण (tool) साबित हो सकता है। पिछले दो दशकों में सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों में इन तकनीकों के तेजी से अनुप्रयोग हुआ है साथ ही ऐतिहासिक अध्ययनों में भी ये उपयोगी साबित हो सकते हैं।

बुद्धकालीन बिहार के भूगोल के ऐतिहासिक अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों के रूप में मूल पालि ग्रंथों का मुख्य स्थान है जिसमे त्रिपिटक तथा उनपर लिखी टीकाएँ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इनके अलावा बुद्ध के जीवन वृत्तान्त के लिए कुछ अन्य साहित्य जैसे विभिन्न निकाय साहित्य, महावस्तु, ललित विस्तर, अभिनिष्क्रमणसूत्र, जातक कथाएं भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

"एन्सिएंट जियोग्राफी ऑफ़ इंडिया" (1871 ई.): प्राचीन भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में बुद्धकालीन भूगोल पर सबसे पहले विश्लेषण करने वाले विद्वान् के रूप में एलेग्जेंडर कनिंघम का नाम सर्वदा आदर के साथ लिया जाता है। उनकी पुस्तक "एन्सिएंट जियोग्राफी ऑफ़ इंडिया" (1871) में उत्तर भारत से सम्बंधित काफी जानकारियां उपलब्ध हैं परन्तु उनका यह कार्य मूलतः ह्वेन सांग की यात्रा से जुड़े तथ्यों पर ही केन्द्रित है। अगर ह्वेन सांग से प्राप्त तथ्यों का जैन तथा ब्राह्मण साहित्यों से तुलनातमक अध्ययन होता तो

शायद कनिंघम का कार्य और अधिक परिष्कृत होता। चीनी यात्रियों के यात्रा विवरण के जो अनुवाद उपलब्ध हैं उनमें भी बुद्धकालीन बिहार के भूगोल की जानकारियां समाहित हैं।

“दि ट्रेवल्स ऑफ़ फाहियान” (1886 ई.): इस प्रकार के अनुवादों में जे. लेजे (जेम्स लेग्गी) की कृति “दि ट्रेवल्स ऑफ़ फाहियान” (1886 ई.) जो फाहियान के यात्रा विवरण ‘फ़ो-क्यो-की’ का अनुवाद है, महत्त्वपूर्ण है।

“बुद्धिस्ट रिकाड्‌र्स ऑफ़ दि वेस्टर्न वर्ल्ड” (1884 ई.): चीनी यात्री सुंग-युन के यात्रा (600 ई.) विवरण का अनुवाद सैमुएल बील ने “बुद्धिस्ट रिकाड्‌र्स ऑफ़ दि वेस्टर्न वर्ल्ड” के प्रथम भाग में किया है। इसी पुस्तक में ह्वेन सांग की यात्रा (629 - 645 ई.) का एक और विवरण जिसका मौलिक चीनी नाम ‘सि यू कि’ है, की भी जानकारी उपलब्ध है।

“इम्पीरियल गजेटियर ऑफ़ इंडिया” (1909 ई.): इस पुस्तक में फ्लीट महोदय ने भी बुद्धकालीन भारत के भूगोल का वर्णन किया है। बिहार सरकार के जन संपर्क विभाग ने नालंदा, राजगृह, वैशाली और बोधगया जैसे प्रसिद्ध बुद्धकालीन स्थलों पर कुछ विवरण पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं जो कार्योपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

कुछ भारतीय विद्वानों ने भी क्षेत्रीय स्तर पर प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक भूगोल पर कार्य किये हैं जैसे हेमचन्द्र रॉय चौधरी, बी. सी. सेन तथा एच. डी. संकलिया इत्यादि। परन्तु बुद्धकालीन बिहार के भूगोल पर जिसका अतीत इतना गौरवशाली है, किसी ने भी अलग से कार्य नहीं किया है, जबकि प्राचीन बिहार के ऐतिहासिक भूगोल के सन्दर्भ में बौद्ध स्रोत काफी हद तक भरोसेमंद और सटीक साबित हो सकते हैं, क्योंकि बिहार की धरती पर ही बौद्ध धर्म ने जन्म लिया, विकसित हुआ तथा फला फूला। अतः यह स्वाभाविक ही था की बौद्ध साहित्य में बिहार का काफी विस्तार से वर्णन किया गया है। इस सम्बन्ध में जैन साहित्य उतने उपयोगी साबित नहीं होते क्योंकि ज्यादातर जैन साहित्य बुद्धकाल के बाद की शताब्दियों में और भारत के पश्चिमी भाग में लिखे गए, जिनके लेखकों को बिहार के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। बिहार से सम्बंधित नदियों, पहाड़ियों, क्षेत्रों तथा स्थानों के सम्बन्ध में दी गयी उनकी जानकारियाँ भ्रामक भी सिद्ध होती हैं जिसकी पुष्टि समकालीन साहित्यों में अन्यत्र नही होती।

"जियोग्राफी ऑफ़ अर्ली बुद्धिज़्म" (1932 ई.): पालि साहित्य पर आधारित इस विषय पर लिखी जाने वाली पहली पुस्तक डा. विमलाचरण लाहा (बी. सी. लॉ) की "जियोग्राफी ऑफ़ अर्ली बुद्धिज़्म" (1932 ई.) है। इसके बाद डा. लाहा ने इस विषय पर कई अन्य महत्वपूर्ण पूरक निबंध भी लिखें जिनमें "ज्योग्राफिकल एसेज" (1937 ई.), "इंडिया एज डिसक्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्ट्स ऑफ़ बुद्धिज़्म एंड जैनिज़्म" (1941 ई.) तथा "इंडोलॉजिकल स्टडीज" (1962 ई.) प्रमुख हैं।

"हिस्टोरिकल जियोग्राफी ऑफ़ एन्सिएंट इंडिया" (1954 ई.): उपर्युक्त रचनाओं के अलावा 1954 में डा. लाहा ने "हिस्टोरिकल जियोग्राफी ऑफ़ एन्सिएंट इंडिया" की रचना की जिसमे बुद्धकालीन कई अनसुने नदियों, पर्वतों एवं स्थानों का विवरण दिया है जिनका बौद्ध साहित्य के अलावा कहीं और विवरण नहीं मिलता। निश्चित रूप से डा. विमलाचरण लाहा ने पालि स्रोतों से बुद्धकालीन समाज, इतिहास, भूगोल तथा आर्थिक जीवन से सम्बंधित उल्लेखनीय जानकारियां संकलित की हैं।

"गया एंड बोधगया" (1934 ई.): डा. वेणीमाधव बडुआ लिखित "गया एंड बोधगया" (1934 ई.) अपने विषय पर लिखी एक अन्य प्रमुख रचना है जिसमे मगध और उसके आस पास के क्षेत्रों के भौगोलिक इतिहास पर प्रकाश डाला गया है।

"ए रिपोर्ट ऑन ए टूर ऑफ़ एक्सप्लोरेशन ऑफ़ दि एंटीक्वीटीज इन तराई, नेपाल एंड दि रीजन ऑफ़ कपिलवस्तु" (1901ई.): इसी क्रम में बाबू पूरनचंद्र मुखर्जी द्वारा रचित "ए रिपोर्ट ऑन ए टूर ऑफ़ एक्सप्लोरेशन ऑफ़ दि एंटीक्वीटीज इन तराई, नेपाल एंड दि रीजन ऑफ़ कपिलवस्तु" (1901 ई.) अपने विषय में एक अत्यंत प्रमाणिक रचना है। इसमें शाक्यों एवं कोलियों के सम्बन्ध में जो निष्कर्ष निकाले गए हैं वो आज भी मान्य हैं।

"दि हिस्टोरिकल जियोग्राफी एंड टोपोग्राफी ऑफ़ बिहार" (1963 ई.): मिथिलाशरण पाण्डेय द्वारा 1963 ई. में रचित "दि हिस्टोरिकल जियोग्राफी एंड टोपोग्राफी ऑफ़ बिहार" बिहार के ऐतिहासिक भूगोल तथा स्थलाकृति से सम्बंधित एक अति महत्त्वपूर्ण कृति है जिसकी प्रस्तावना प्रसिद्ध इतिहासकार ए. एल. बाशम ने लिखते हुए इसकी काफी तारीफ़ की है।

“दि एंटीक्वारियन रिमेंस इन बिहार” (1963 ई.): के. पी. जायसवाल रिसर्च इंस्टिट्यूट पटना द्वारा हिस्टोरिकल रिसर्च सीरीज का वॉल्यूम - 4 “दि एंटीक्वारियन रिमेंस इन बिहार” (1963 ई.) डी. आर .पाटिल द्वारा लिखित एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसमे प्राचीन बुद्धकालीन बिहार के पुरातात्त्विक स्थलों की जानकारी मिलती है।

उपर्युक्त वर्णित सारे साहित्य अंग्रेजी में लिखे गए हैं और तुलनात्मक दृष्टि से इस विषय पर हिंदी में शायद ही कोई स्वतंत्र ग्रन्थ हो फिर भी **राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित “बुद्ध - चर्य्या”** का प्रयोग सूक्ष्म सूझ बूझ से करने पर बुद्धकालीन भूगोल से सम्बंधित साक्ष्य निकाले जा सकते हैं। उदाहरण के लिए किम्बिला, किटागिरी, एरककच्छ, मछिकासंड, कजन्गल, सेतकन्निक, भग्गदेश और सुन्सुमारगिरी इत्यादि जैसी कई जगहों के बारे में नवीन बातें बतायी गयी हैं। **भिक्षु जगदीश कश्यप जी ने “उदान”** के हिंदी अनुवाद के अंत में तथा **भिक्षु धर्मरक्षित के सहयोग से ‘संयुक्त निकाय’** के हिंदी अनुवाद के अंत में जिन नामों की सूचियाँ दी हैं, वे बुद्धकालीन बिहार के भूगोल के अध्ययन में काफी उपयोगी हैं। भिक्षु धर्मरक्षित ने एक संक्षिप्त लेख भी **“बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय”** शीर्षक से लिखा है जो ‘संयुक्त निकाय‘ के हिंदी अनुवाद में संलग्न है और यह अलग पुस्तिका के रूप में भी प्राप्त है। अत्यंत संक्षिप्त होते हुए भी यह लेख काफी महत्त्वपूर्ण है।

“बौद्ध धर्म और बिहार” (1960 ई.): बुद्धकालीन बिहार में बौद्ध धर्म से सम्बंधित काफी सारे अवशेष, चिन्ह, स्मृतियाँ इत्यादि हवालदार त्रिपाठी द्वारा लिखित “बौद्ध धर्म और बिहार” में भी वर्णित हैं जो बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा प्रकाशित हुई थी। इसके अलावा बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी से हवालदार त्रिपाठी द्वारा ही रचित **“बिहार की नदियाँ: ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण” - प्रथम खंड (1977 ई.)** में उत्तर बिहार की नदियों के भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन का सराहनीय प्रयास किया गया है।

सन 1953 ई. में प्रकाशित मोतीचंद्र द्वारा लिखित “सार्थवाह” जो बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा प्रकाशित हुई है, इस पुस्तक में भी प्राचीन भारतीय पथ पद्धति, छठी एवं पांचवीं शताब्दी ई. पू. के प्रमुख राजमार्ग, व्यापारिक स्थलों की जानकारी का अमूल्य संग्रह है। इसी प्रकार...

डा. देव सहाय त्रिवेद द्वारा लिखित “प्राक मौर्य बिहार” (1954 ई.) एवं डा. प्रभुदयाल अग्निहोत्री की कृति “पतंजलिकालीन भारत” (2000 ई.) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित दो अमूल्य कृतियाँ हैं जो प्राचीन बिहार की भौगोलिक व्यवस्था के दिग्दर्शन एवं मानवीय तत्त्वों के साथ भूतत्त्व, सांस्कृतिक स्थान, साहित्य तथा विभिन्न धार्मिक परम्पराओं का विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं।

भरतसिंह उपाध्याय द्वारा रचित “बुद्धकालीन भारतीय भूगोल” (1961 ई.) में भी ऐतिहासिक भारतीय भूगोल से सम्बंधित ढेरों जानकारियां दी गयी हैं।

“वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थ” (1985 ई.) वैशाली के सम्बन्ध में कई विद्वानों द्वारा लिखित एक अन्य महत्त्वपूर्ण संकलन है। इसके अलावा महाबोधि सभा के हिंदी मासिक “धर्मदूत” में वैशाली, पावा, देवदह, और राजगृह इत्यादि बौद्ध स्थानों के सम्बन्ध में कई खोजपूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं।

1.3 शोध समस्या:

उत्तर में हिमालय पर्वत की तराई में स्थित कपिलवस्तु से लेकर गंगा नदी के दक्षिण में स्थित सुसुमारगिरी (विन्ध्याचल पर्वत) के बीच के लगभग साढे तीन सौ किलोमीटर दूर अवस्थित क्षेत्रों के बीच के अक्षांशीय विस्तार (उत्तर से दक्षिण) में बुद्धचरण के स्पर्श ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित है। वहीं बुद्धचरण के देशांतरिए विस्तार पूर्व में खड़गपुर की पहाड़ी (अंग प्रदेश) एवं संथाल परगना के कुछ हिस्सों से लेकर पश्चिम में मथुरा और कुरु के बीच के लगभग बारह सौ किलोमीटर तक के पथ पर पड़ने के भी ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं। इतने विशाल भौगोलिक क्षेत्रों को बुद्ध ने अपने जीवन काल में समय समय पर वार्षिक प्रवसनों के माध्यम से दैदीप्यमान किया। स्वाभाविक रूप से बुद्ध ने विभिन्न पर्वतों, नदियों, वनों, बस्तियों, नगरों, जैसे भौगोलिक संकेतकों को पार किया होगा, उन पर निवास किया होगा, बुद्ध वचन (उपदेश) दिए होंगे। ऐसे भौगोलिक संकेतकों की पहचान कर उनके आधुनिक भौगोलिक मानचित्रण द्वारा बुद्ध के प्रवसन का नगरीकरण, मार्गों के विकास, व्यापार वाणिज्य पर प्रभाव इत्यादि के बीच सह सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक प्रतीत होता है।

1.4. शोध का उद्देश्यः

- बुद्धकालीन बिहार के नगरों की अवस्थिति के पीछे के भौगोलिक कारक तथा प्राचीन नामों वाले नगरों तथा ग्रामों की वर्तमान में पहचान करना।
- बुद्धकालीन बिहार में नगरीकरण के कारण (भारत के सन्दर्भ में द्वितीय नगरीकरण) तथा उनकी उत्तरजीविता के लिए उत्तरदायी तत्त्वों को खोजना।
- तत्कालीन बिहार में ब्राह्मण धर्म के विरोध स्वरुप बौद्ध धर्म के विकास के पीछे के भौगोलिक कारणों की पहचान करना।
- उपदेश एवं वर्षावास भ्रमण के दौरान बुद्ध के पदचिन्हों से सम्बंधित स्थलों एवं यात्रा मार्गों की वर्तमान में पहचान तथा उनका आधुनिक मानचित्रण प्रणाली द्वारा विश्लेषण।

1.5. शोध परिकल्पनाः

- बुद्धकालीन बिहार की महाजनपदों की राजधानियां उस समय के महानगरों के रूप में विकसित हुईं।
- बिहार स्थित गंगा के अपवाह क्षेत्र की उपयुक्त भौगोलिक परिस्थितियों ने नगरीकरण के साथ नवीन उभरते श्रमण सम्प्रदायों (बौद्ध तथा जैन इत्यादि) के बीच समन्वय स्थापित किया।
- बिहार स्थित गंगा के अपवाह क्षेत्र में ताम्र, लौह एवं शिल्प में प्रयुक्त होने वाले रत्नों के अभाव के कारण इनको प्राप्त करने के लिए आवागमन/यातायात के कई मार्गों के विकास हुए।
- नगरीकरण तथा यातायात मार्गों के साथ स्थापित होते सामंजस्य में बुद्ध ने गंगा के अपवाह क्षेत्र में कई स्थानों का भ्रमण कर एवं वर्षावास के माध्यम से बौद्ध धर्म का प्रसार किया।

2. शोध अभिकल्पना (डिजाईन) एवं विधि:

2.1 शोध आंकडें तथा प्रयुक्त तकनीक

ऐतिहासिक शोध में सूचनाएँ इकठ्ठा करने एवं उनका विश्लेषण करने के लिए विभिन्न विधियों का उपयोग किया जाता है। बुद्धकालीन बिहार के भू ऐतिहासिक अध्ययन में विभिन्न प्राथमिक एवं द्वितीयक साहित्यों

के अवलोकन उपरांत प्राप्त भौगोलिक अभिव्यक्तियों (स्थान, नाम इत्यादि) का बुद्ध चरण से सह सम्बन्ध स्थापित करने में सम्बंधित क्षेत्र विशेष का उपग्रहों से प्राप्त भौगोलिक आंकड़ों का समावेशन कर मॉडल निर्माण एवं प्रत्यक्षीकरण भौगोलिक सूचना तंत्र तकनीक द्वारा संभव है। भौगोलिक सूचना तंत्र तकनीक में प्रयुक्त सॉफ्टवेयरों के माध्यम से आंकड़ों (सूचनाओं) के मानचित्रण के अलावा बुद्ध के द्वारा समय समय पर किये गए प्रवसनों का बौद्ध धर्म के प्रसार, व्यापारिक मार्गों एवं बस्तियों के विकास का भी संभावित अनुमान संभव है।

2.2 शोध विधि तथा आंकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक एवं भौगोलिक सूचनाओं एवं आंकड़ों के कार्य कारण सम्बन्ध होने के कारण यह शोध अंतरविषयक उपागम का उपयोग स्वाभाविक रूप से अपने में समाहित करता है क्यूंकि इसमें बुद्धकाल के भौगोलिक इतिहास पर विशेष बल दिया गया है। यही कारण है की इसमें ऐतिहासिक घटनाओं के पीछे के भौगोलिक तत्त्वों जैसे स्थलाकृति, उच्चावच, भूमि उपयोग प्रतिरूप इत्यादि से जुड़े आंकड़ों को समझने हेतु आधुनिक भौगोलिक सूचना तंत्र प्रणाली और मानचित्रण का यथासंभव प्रयास किया गया है। इसी क्रम में वैसे बुद्धकालीन प्राचीन ऐतिहासिक स्थल जिनके नामों के वर्णन के साथ उनकी सम्बंधित भौगोलिक सूचनाएं भी विभिन्न साहित्यों में वर्णित हैं, नासा (NASA) एवं इसरो (ISRO) जैसी संस्थाओं के उपग्रहिए चित्रण से प्राप्त आंकड़ों के प्रसंस्करण द्वारा वर्तमान में उनकी अवस्थिति से सम्बंधित मानचित्रण से उनकी उत्तरजीविता का भी अनुमान लगाया जा सकता है। भौगोलिक सूचना तंत्र प्रणाली और मानचित्रण बुद्धकाल से सम्बंधित स्थलों के साथ साथ तत्कालीन नदी एवं स्थल मार्ग की खोयी हुई सांस्कृतिक विरासत को पुनर्स्थापित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कड़ी साबित हो सकते हैं।

3. अध्ययन की सार्थकता

भगवान् बुद्ध का वर्तमान बिहार से काफी गहरा सम्बन्ध रहा है। बिहार शब्द ही 'विहार' से बना है जो बौद्ध धर्म के विहारों के लिए ही प्रयुक्त होता रहा है। अतः बिहार सिर्फ एक भौगोलिक अभिव्यक्ति ना होकर छठी सदी ईसा पूर्व में हुए एक धार्मिक क्रांति के जन्मदाता के रूप में भी है साथ ही इतिहास के उस संक्रमण काल के रूप में भी है जब जनपद महाजनपद के रूप में विकसित हो रहे थे एवं प्रथम गणतंत्र भी अपने आकार ले रहे थे। अब तक के बुद्धकालीन भौगोलिक अध्ययन भारत को केंद्र में रख कर किये गए हैं,

परन्तु बिहार विशेष के सन्दर्भ में अलग से अध्ययन सामग्रियों का निश्चित रूप से अभाव है। साथ ही अब तक के बुद्धकालीन भू ऐतिहासिक अवलोकनों में सम्बंधित भौगोलिक संकेतकों के मानचित्रों का भी नितांत अभाव है। पिछले दो तीन दशकों में कंप्यूटर जनित भौगोलिक सूचना तंत्र पर आधारित (Geographical Information System) तकनीकों का विकास हुआ है और उनका समायोजन समाजशास्त्रीय आंकड़ों के विश्लेषण एवं प्रत्यक्षीकरण में हुआ है उससे ऐतिहासिक अध्ययन भी अछूता नहीं रह सकता।

4. वर्तमान परिदृश्य में विषय की आवश्यकता एवं उपयोगिता

बौद्ध धर्म एक सार्वभौमिक धर्म होने के कारण विश्व के कई देशों में फैला हुआ है। बिहार राज्य की पहचान भी इस धर्म के जन्मस्थली के रूप में वैश्विक रूप से स्थापित है। अतः इस धर्म के प्रवर्तक भगवान् बुद्ध से सम्बंधित भौगोलिक संकेतकों की आधुनिक पहचान उन्हें वैश्विक स्तर पर महत्त्व दिलाने में अपनी भूमिका अदा कर सकता है जिसका सकारात्मक प्रभाव सम्बंधित क्षेत्र के धार्मिक पर्यटन को आकर्षित करने में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही नविन पहचान स्थापित होने से इनका संरक्षण एवं जनता के बीच इनकी जागरूकता को बढाने में भी इससे हर संभव सहायता मिलेगी।

5. सामयिक ज्ञान में योगदान

प्रस्तावित भू - ऐतिहासिक विश्लेषण बदलते समय के साथ भगवान् बुद्ध से जुड़े भौगोलिक संकेतकों के प्रत्यक्षीकरण द्वारा बौद्ध धर्म के विकास के साथ आये परिवर्तनों के सहसंबंधों के विश्लेषण में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही आधुनिक तरीके से भौगोलिक सूचना तंत्र तकनीक की सहायता से किया गया इनका कंप्यूटर आधारित मानचित्रण, एक बड़ी जनसँख्या तक छठी सदी ईसा पूर्व के बिहार के विस्तार एवं उत्तरजीविता का सजीव अवलोकन कराने में भी रूचिकर साबित होगा।

6. भविष्य के कार्य

यह अध्ययन भविष्य भू - ऐतिहासिक शोध के लिए एक पथ प्रदर्शक के रूप में सिद्ध हो सकता है।

7. प्रस्तावित शोध कार्य का अध्यायीकरण

सम्पूर्ण शोध प्रबंध निम्न अध्यायों में औपबंधिक रूप से अध्यायकृत किया जा सकता है

भूमिका

अध्याय एक: बुद्धकालीन बिहार: एक भौगोलिक अभिव्यक्ति

अध्याय दो: द्वितीय नगरीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अध्याय तीन: विभिन्न क्षेत्रों का भौगोलिक संकेतकों के साथ अंतर्संबंध

अध्याय चार: संभावित व्यापारिक मार्गों तथा नगरों की पहचान, विशेषता तथा उनका मानचित्रण

अध्याय पांच: बुद्ध के पदचिन्हों, संभावित यात्रा मार्गों की वर्तमान स्थिति, महत्त्व तथा आधुनिक मानचित्रण द्वारा विश्लेषण

निष्कर्ष

परिशिष्ट

संदर्भिका

सन्दर्भ सूची

प्राथमिक स्रोत

- त्रिपिटक साहित्य
- ललित विस्तर
- अभिनिष्क्रमणसूत्र
- दीघनिकाय
- महापरिनिब्बान सुत्त
- महावंश
- जातक कथाएं
- अष्टाध्यायी

द्वितीयक स्रोत (ग्रन्थ सूची)

- कनिंघम, ए (1871). "एन्सिएंट जियोग्राफी ऑफ़ इंडिया", त्रुबनर एंड को. लन्दन
- लॉ, बी. सी (1954). "हिस्टोरिकल जियोग्राफी ऑफ़ एन्सिएंट इंडिया", एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ फ्रांस
- लॉ, बी. सी (1938). "ज्योग्राफिकल एसेज" (1937), लुजैक एंड कम्पनी, लन्दन
- लॉ, बी. सी (1941). "इंडिया एज डिसक्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्ट्स ऑफ़ बुद्धिज़्म एंड जैनिज़्म", लुजैक एंड कम्पनी, लन्दन
- लॉ, बी. सी (1941). "इंडोलॉजिकल स्टडीज", डा. गंगानाथ झा रिसर्च इंस्टिट्यूट, इलाहाबाद
- लॉ, बी. सी (1932). "जियोग्राफी ऑफ़ अर्ली बुद्धिज़्म", कीगन पॉल ट्रेंच त्रुबनर एंड को. लन्दन
- लेजे, जे (1883). "दि ट्रेवल्स ऑफ़ फाहियान", ऑक्सफ़ोर्ड
- बील, एस (1884). "बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑफ़ दि वेस्टर्न वर्ल्ड", कीगन पॉल ट्रेंच त्रुबनर एंड को. लन्दन
- फ्लीट, जे. एफ (1909). "इम्पीरियल गजेटियर ऑफ़ इंडिया", ऑक्सफ़ोर्ड
- बरुआ, बी (1934). "गया एंड बुद्ध - गया", खंड. २, इंडियन रिसर्च इंस्टिट्यूट, कोलकाता
- मुखेर्जी, बी. पी. सी (1901). "ए रिपोर्ट ऑन ए टूर ऑफ़ एक्सप्लोरेशन ऑफ़ दि एंटीक्वीटीज इन तराई, नेपाल एंड दि रीजन ऑफ़ कपिलवस्तु", ऑफिस ऑफ़ दि सुपेरिन्टेन्डेन्ट ऑफ़ गवर्नमेंट प्रिंटिंग, इंडिया, कोलकाता
- पाण्डेय, एम. एस (1963). "दि हिस्टोरिकल जियोग्राफी एंड टोपोग्राफी ऑफ़ बिहार", मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- पाटिल, डी. आर (1963). "दि एंटीक्वारियन रिमेंस इन बिहार", के. पी. जायसवाल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पटना
- घोष, ए (1973). "दि सिटी इन अर्ली हिस्टोरिकल इंडिया", इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज, शिमला

- सांकृत्यायन, आर (1952). “बुद्ध - चर्य्या”, महाबोधि सभा, सारनाथ, बनारस
- कश्यप, जे (1938). “उदान”, महाबोधि सभा, सारनाथ, बनारस
- त्रिपाठी, एच (1959). “बौद्ध धर्म और बिहार”, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना
- त्रिपाठी, एच (1977). “बिहार की नदियाँ - ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण” - प्रथम खंड, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना
- शर्मा, आर. एस (1983). “मटेरियल कल्चर एंड सोशल फोर्मेशंस इन एन्सिएंट इंडिया, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, दिल्ली
- एरडासी, जी (1988). “अर्बेनाईजेशन इन अर्ली हिस्टोरिक इंडिया, बार इंटरनेशनल सीरीज 430 ऑक्सफ़ोड
- झा, एस. के (1988). “बिगनिंग्स ऑफ़ अर्बेनाईजेशन इन अर्ली हिस्टोरिक इंडियाः ऐ स्टडी ऑफ़ गंगेटिक प्लेन, नोवेल्टी एंड कम्पनी, पटना
- धर्मरक्षित, बी (1961). “बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय”, जैन साहित्य शोध संस्थान, जयपुर
- मोतीचंद्र (1953). “सार्थवाह”, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
- उपाध्याय, बी. एस (1961 ई.). “बुद्धकालीन भारतीय भूगोल”, हिंदी साहित्य सम्मलेन, इलाहाबाद
- मिश्रा, याई (1985 ई.). “वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थ”, रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्राकृत, जैनोलोजी एंड अहिंसा, वैशाली
- राय, यू. एन (1965). “प्राचीन भारत में नगर और नगर जीवन”, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- त्रिवेद, डी. एस (1954). “प्राकमौर्य बिहार”, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्
- अग्निहोत्री, पी.डी (2000). “पतंजलिकालीन भारत”, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्